The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 3 | March 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

गिजुभाई बधेका का समाज को योगदान

संदीप कुमार
(सहायक प्रवक्ता),
ज्योति
बी.एड कॉलेज, रामपुरा पंजाब(फाजिल्का)

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 28-03-2025

Published: 15-04-2025

Keywords:

बाल मनोविज्ञान,शिक्षाशास्त्र, शिक्षाप्रणाली, योगदान, साहित्य

ABSTRACT

गिजुभाई बधेका ने शिक्षा के माध्यम से समाज को योगदान दिया है वह एक महान शिक्षाशास्त्री एवं गुजराती भाषा के लेखक थे। इन्होंने बाल मंदिर नामक विद्यालय की स्थापना की। गिजूभाई एक महान शिक्षक थे जिन्होंने भारत में मांटेसरी शिक्षा पद्धतियों को प्रस्तुत करने में मदद की। उन्हीं "मूछली मां" के रूप में जाना जाता है।गिजू भाई ने बाल (मूंछों वाली मां)- केंद्रित शिक्षा के क्षेत्र में सराहनीय प्रयास किए। उनका मानना थी कि शिक्षा बालक के लिए है बालक शिक्षा के लिए नहीं। वे बालकों के प्रति अति संवेदनशील थे और अपने संपूर्ण जीवन में उन्होंने शिक्षा को बालकों की मौलिक निधि के रूप में उजागर किया।इन्होंने बाल किशोरों की शिक्षा के साथसाथ प्रोढो की शिक्षापर बल दिया।- गिजुभाई ने साहित्य लेखन का कार्य भी किया, उनका साहित्य बाल मनोविज्ञान,शिक्षाशास्त्र, एवं किशोर साहित्य से संबंधित है। गिजुभाई का योगदान भारतीय पर्यावरण के लिए उपयुक्त बाल शिक्षाप्रणाली का विकासशिक्षकों , का प्रशिक्षण और बच्चों के लिए साहित्य के एक निकाय का निर्माण था।

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15223309

प्रस्तावना :-

गिजूभाई एक महान समाज सेवक,शिक्षा शास्त्री एवं गुजराती भाषा के लेखक थे इनका पूरा नाम गिरजा शंकर भगवान जी बधेका था। इनका जन्म को गुजरात के चितलगांव में हुआ था। वकालत का 1885 नवंबर सन 15 पेशा छोड़कर गिजुभाई शिक्षा जगत में आए और बच्चों के लिए धुरंधर वकील बन गए। अंग्रेजों की दासता से दक्षिण मूर्ति विद्यार्थी" मुक्ति के युग में ही भावनगर में एक राष्ट्रीय शिक्षा संस्थानभवनई थी। की स्थापना हु " में उसकी आजीवन 1916 गिजूभाई के मामा यहां काम करते थे उन्हीं की प्रेरणा से गिजूभाई ने भी सन सदस्यता ग्रहण कर ली। पहले में विनय मंदिर के आचार्य बनाए गए। अपने प्रयोगों और अनुभव के आधार पर उन्होंने निश्चय किया था कि बच्चों के सही विकासके लिए उन्हें देश का उत्तम नागरिक बनाने के लिए किस

प्रकार की शिक्षा देनी चाहिए और किस ढंग से,अपने प्रयोगों और अनुभव के आधार पर उन्होंने निश्चय किया था कि बच्चों के सही विकास के लिएकिस प्रकार की शिक्षा देनी ,उन्हें देश का उत्तम नागरिक बनाने के लिए , चाहिए और किस ढंग से। इसी ध्येय को सामने रखकर उन्होंने बहुतसी बालोपयोगी कहानियां लिखीं। ये - कहानियां गुजराती दस पुस्तकों में प्रकाशित हुई हैं। इन्हीं कहानियां का हिन्दी अनुवाद सस्ता साहित्य मण्डलनई , दिल्ली ने पांच पुस्तकों में प्रकाशित किया गया | बच्चे इन कहानियों को चाव से पढ़ें, उन्हें पढ़ते या सुनते समय, उनमें लीन हो जाएं, इस बात का उन्होंने पूरा ध्यान रखा। संभव- असंभव, स्वाभाविक-अस्वाभाविक, इसकी चिन्ता उन्होंने नहीं की। यही कारण है कि इन कहानियों की बहुत-सी बातें अनहोनी-सी लगती हैं, पर बच्चों के लिए तो कहानियों में रस प्रधान होता है, कुतूहल महत्व रखता है और ये दोनों ही चीजें इन कहानियों में भरपूर हैं।. उनकी रचनाएं आनंदी कौआ, चालाक खरगोश, बुढ़िया और बंदरिया प्रमुख है।

दक्षिणमूर्ति' छात्रावास की स्थापना

गीजू भाई अपने पुत्र की शिक्षा के सिलसिले में जब छोटे बच्चों के विद्यालय में गए तो उन्हें मांटेसरी पद्धति की एक पुस्तक मिली। उसका गीजू भाई पर बड़ा प्रभाव पड़ा। उस पद्धति को तथा पश्चिम की कुछ अन्य शिक्षा पद्धतियों को मिलाकर भारतीय परिस्थितियों के अनुसार बच्चों की आरंभिक शिक्षा को नया रूप देने का काम उन्होंने हाथ में लिया। सर्वप्रथम भावनगर में 'दक्षिणमूर्ति' नाम से एक छात्रावास की स्थापना हुई। अपनी वकालत छोड़कर गीजू भाई इसी काम में जुट गए। नाना भाई भट्ट इसमें उनके सहयोगी थे। शिक्षा की नई पद्धति के प्रयोग के लिए शिक्षकों का प्रशिक्षण आवश्यक समझ कर गीजू भाई के आचार्यत्व में 'दक्षिणमूर्ति' को अध्यापक प्रशिक्षण केन्द्र का रूप दे दिया गया।

बाल केन्द्रित शिक्षा और उसका महत्व

गिजु भाई छात्र-मनोविज्ञान एवं बाल मनोविज्ञान के ज्ञाता थे। वे बालकों के लिए असीम प्यार तथा सहानुभूति रखते थे। वे शिक्षा के बालकेन्द्रित स्वरूप के सम्प्रेषण के प्रणेता थे। उनका शिक्षा दर्शन बाल दर्शन था। बाल केन्द्रित शिक्षा कीशिक्षण विधियों अनुशासन तथा शिक्षक-शिष्य सम्बन्धों को बताते हुए उनका पूरा जीवन एक तपस्वी के रूप में बीता। बाल मनोविज्ञान की सहायता से शिक्षक अपनी शिक्षण सम्बन्धी समस्याओं को आसानी से सुलझा सकते हैं। हम यह भी कह सकते हैं कि मनोविज्ञान विशेषतया बाल मनोविज्ञान से शिक्षण में सुधार किया जा सकता है।

(1) **बालक को समझना** - बालक के सम्बन्ध में शिक्षक को उसके व्यवहार के मूल आधारों आवश्यकताओं, मानसिक स्तर रूचियों योग्यताओं आदि का ज्ञान होना चाहिए। बालक जो भी सीखता है उससे उसकी आवश्यकताओं का घनिष्ट सम्बन्ध होता है। स्कूल में पिछड़े हुए और समस्या-बालकों में अधिकतर ऐसे होते हैं जिनकी आवश्यकताए स्कूल में पूरी नहीं होती है इसलिए ऐसे व्यक्ति आवारागर्दी करते हैं या स्कूल से भागते हैं। मनोविज्ञान के ज्ञान के अभाव में शिक्षक मारपीटकर इन दोषों को दूर करने का प्रयास करता है परन्तु बालक को समझने वाला शिक्षक यह जानने का प्रयास करता है कि कमी कहा है।

(2) **पाठ्यक्रम** -स्कूल के पाठ्यक्रम का विकास व्यक्तिगत विभिन्नताओं प्रेरणाओं मूल्यों और सीखने के सिद्धातों के मनोविज्ञान के ज्ञान पर आधारित होना चाहिए। इन बातों का ध्यान रखना चाहिए कि शिक्षार्थी की और समाज की क्या आवश्यकताये है और सीखने की कौन सी क्रियाओं से ये आवश्यकतायें सर्वोत्तम रूप से पूर्ण हो सकती है।

(3) **शिक्षण विधि**- शिक्षण विधि की समस्या को सुलझाने के लिए बाल मनोविज्ञान सहायता करता है। बाल मनोविज्ञान सीखने की प्रक्रिया विधियों महत्वपूर्ण कारकों लाभदायक और हानिकारक दशाओं रूकावटों सीखने का वक्र तथा प्रशिक्षण सक्रमण आदि विभिन्न तत्वों से परिचित कराता है।

(4) **मूल्यांकन एवं प्रशिक्षण** -शिक्षण से ही शिक्षक का काम पूरा नहीं हो जाता है उसे बालक के ज्ञान का परीक्षण करना भी है। मूल्याकन से छात्र की उन्नति का पता चलता है। बाल मनोविज्ञान से शिक्षक को किसी शिक्षण परिस्थिति में बालक के मूल्याकन से ही सहायता नहीं मिलती, बल्कि शिक्षक के रूप में अपनी योग्यता का भी पता चलता है।

(5) **मानव सम्बन्ध** - बाल मनोविज्ञान ने शिक्षक को मानव सम्बन्धों को समझने में सहायता दी है। शिक्षा मनोविज्ञान से शिक्षक विद्यार्थी सम्बन्धों को बेहतर बनाने में सहायता मिलती है और सीखने के सर्वेगात्मक पहलुओं तथा सम्बन्धों के महत्व का पता चलता है।

(6) **व्यवस्थापन और अनुशासन-** बाल मनोविज्ञान वापस्थापन अनुशासन और मानसिक आरोग्य सभी पर मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विचार करता है। अच्छे व्यवस्थापन का तात्पर्य व्यक्ति अथवा परिवेश में से किसी एक में परिवर्तन न होकर दोनों में ही परिवर्तन है।

(7) **प्रयोग** - बाल मनोविज्ञान अनुसंधान में भी सहायता करता है। शिक्षा में या व्यवहार में शिक्षक के सामने ऐसी समस्याए उत्पन्न होती हैं जिनको सुलझाने के लिए रोज नये नये प्रयोग करने की आवश्यकता है। नयी-नयी परिस्थितियों में सियाओं को के लिए करने की आवश्य प्रयोग करने चाहिए और उससे निकले निकर्षोका उपयोग करना चाहिए।

(1) कक्षा की समस्याओं का निदान-
(ii) पिछड़े बालक की प्रगति के लिए क्या किये जायें।
(iii) बालक को सुधारने के लिए क्या विधि अपनाई जाये।

इस तरह की समस्याओं को सुलझाने के लिए शिक्षक को इस समस्याओं के कारणों का सफाया करना होगा। इसके लिए शिक्षक को बाल मनोविज्ञान का ज्ञान हो |

निष्कर्ष:-

उपरोक्त विवेचन से कहा जा सकता है गिजूभाई के अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बालक को स्वावलंबी, निर्भय, सृजनशील या हुनरमंद और अभिव्यक्तिशील बनाये। गिजुभाई ने साहित्य लेखन का कार्य भी किया, उनका साहित्य बाल मनोविज्ञान,शिक्षाशास्त्र, एवं किशोर साहित्य से संबंधित है। गिजुभाई का योगदान भारतीय पर्यावरण के लिए उपयुक्त बाल शिक्षाप्रणाली का विकासशिक्षकों , का प्रशिक्षण और बच्चों के लिए साहित्य के एक निकाय का निर्माण था।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

- https://m.thewirehindi.com/article/idea-of-india-politics-society/246763?utm=infinitescrol
- https://studybrainy.com/gajubhai-badheka/
- https://www.mid-day.com/mumbai-guide/things-to-do/article/how-gijubhai-badheka-taught-21245167
- https://www.gijubhaibadheka.in/pdf/books-by-others-on-gijubhai/PhD-thesis-Giju-Bhai-hindi.pdf
- https://en.wikipedia.org/wiki/Gijubhai_Badheka
- https://www.ijirmf.com/wp-content/uploads/201705058.pdf